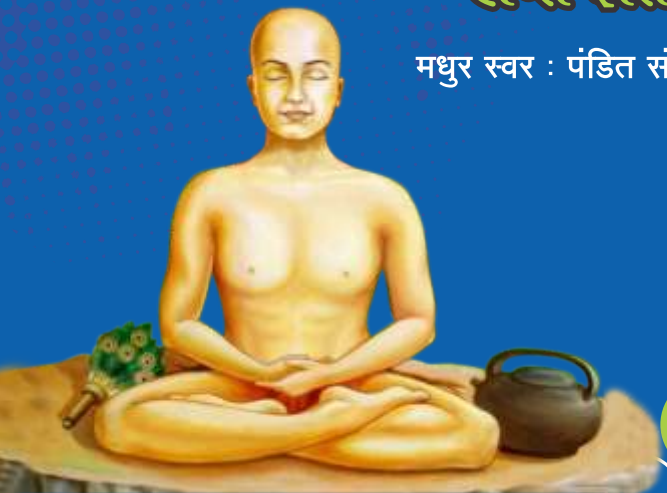
सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

कविवर रघुवरजी कृत

श्री अकंपनाचार्य आदि सप्त शत मुनि पूजा

मधुर स्वर : पंडित संजीवजी जैन, उस्मानपुर



अडिल्ल छन्द

श्री अकम्पन मुनि आदि सब सात है।
कर विहार हथिनापुर आये सात सै।।
तहाँ भयो उपसर्ग बड़ो दुखकार जू।
शान्त भाव से सहन कियो मुनिराज जू।।



सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

मिती जु पन्द्रस श्रावण शुकल प्रमानिये।
ध्यानारूढ़ सुतिष्ठ सर्व मुनि मानिये।।
हुओ उपसर्ग जु दूर धन्य घड़ी आज जी।
तिन प्रति शीश नवाय पूज मुनिराज जी।।



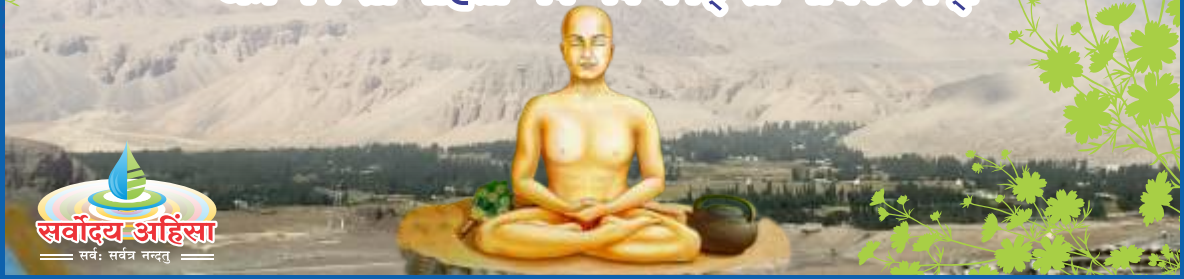
सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

तिनकी पूजा रचूँ भाव अरु भक्ति से।
दिवस सलूना भयो इसी यह युक्ति से।।
आह्वानन स्थापन सन्निधिकरण जी।
तिष्ठ गुरु इत आय करूँ पद सेव जी।।



सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्यादि सप्तशतमुनिसमूह!
अत्र अवतर अवर संवौषट् आह्वानम्।
ओं ही श्री अकम्पनाचार्यादि सप्तशतमुनिसमूह!
अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ओं ही श्री अकम्पनाचार्यादि सप्तशतमुनिसमूह!
अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।



सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

अथाष्टक

शीतल प्रासुक उज्ज्वल जल की कंचन झारी लाऊँ।
जन्म जरा मृतु नाश करन को, तुमरे चरण चढ़ाऊँ।।
श्री अकम्पन गुरु आदि दे मुनी सात सौ जानो।
तिनकी पूज रचूँ सुखकारी भव भव के अघ हानो।।

(चाल–जोगीरासा)

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्यादि सप्तशतमहामुनिभ्यो
जन्मजरामृत्यु–विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।



सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

चन्दन केशर मिश्रित करके नीको चन्दन लाऊँ।
भव आताप जु दूर करन को गुरु के चरण चढ़ाऊँ।।
श्री अकम्पन गुरु आदि दे मुनी सात सौ जानो।
तिनकी पूज रचूँ सुखकारी भव भव के अघ हानो।।

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्यादि सप्तशतमहामुनिभ्यः
संसारताप-विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।



सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

चन्द्र किरण सम उज्ज्वल अक्षत भाव भक्ति से लीने।
पुंज मनोहर श्रीगुरु सन्मुख सरधा कर जु करीने।।
श्री अकम्पन गुरु आदि दे मुनी सात सौ जानो।
तिनकी पूज रचूँ सुखकारी भव भव के अघ हानो।।

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्यादिसप्तशतमहामुनिभ्यो
अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।



सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

बेल चमेली श्री गुलाब के ताजे पुष्प सु लाऊँ।
काम–बाण के नाश करन को श्री गुरु चरण चढ़ाऊँ।।
श्री अकम्पन गुरु आदि दे मुनी सात सौ जानो।
तिनकी पूज रचूँ सुखकारी भव भव के अघ हानो।।

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्यादिसप्तशतमहामुनिभ्यः
कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।



सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

गूंझा फेनी मोदक लाडू ताजे तुरत बनाऊँ।
श्री गुरुवर के चरण चढा कर हर्ष हर्ष गुण गाऊँ।।
श्री अकम्पन गुरु आदि दे मुनी सात सौ जानो।
तिनकी पूज रचूँ सुखकारी भव भव के अघ हानो।।

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्यादि सप्तशतमहामुनिभ्यः
क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।



सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

घृत कपूर की उत्तम ज्योति सु स्वर्ण कटोरी धारूँ।
श्री मुनिवर की करूँ आरती मोह-कर्म को जारूँ।
श्री अकम्पन गुरू आदि दे मुनी सात सौ जानो।
तिनकी पूज रचूँ सुखकारी भव भव के अघ हानो।।

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्यादि सप्तशतमहामुनिभ्यो
मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।



सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

धूप सुगन्ध सुवासित लेकर धूपायन में खेऊँ।।
अष्ट कर्म के नाश करन को आनन्द मंगल देऊँ।।
श्री अकम्पन गुरु आदि दे मुनी सात सौ जानो।
तिनकी पूज रचूँ सुखकारी भव भव के अघ हानो।।

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्यादि सप्तशतमहामुनिभ्यो
अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।



सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

लौंग इलायची श्रीफल पिस्ता अरु बादाम मँगाऊँ।
सेव संतरा खट्टा मीठा, श्री गुरु चरण चढ़ाऊँ।।
श्री अकम्पन गुरु आदि दे मुनी सात सौ जानो।
तिनकी पूज रचूँ सुखकारी भव भव के अघ हानो।।

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्यादि सप्तशतमहामुनिभ्यो
मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।



सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

जल फल आठों द्रव्य मिलाकर भाव-भक्ति से लाया।
हे गुरु! हमको भव से तारो तातैं चरण चढ़ाया।।
श्री अकम्पन गुरु आदि दे मुनी सात सौ जानो।
तिनकी पूज रचूँ सुखकारी भव भव के अघ हानो।।

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्यादि सप्तशतमहामुनिभ्यो
अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।



सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

जयमाला

(दोहा)

मुनि अकम्पन आदि सब, सप्त सैकड़ा जान।
तिनकी यह जयमाल सुन, भाषा करूँ बखान।।



सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

(चौपाई)

जीव दया पाले गुरु स्वामी, दे धर्मोपदेश बहु नामी।
छहों काय की रक्षा पालें, तप कर आठ कर्म को टालें।।
झूठ न रंचमात्र मुख बोलें, जो मन होय वचन सो खोलें।
महासत्य के मुनि धारी, तिनके पायन धोक हमारी।।



सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

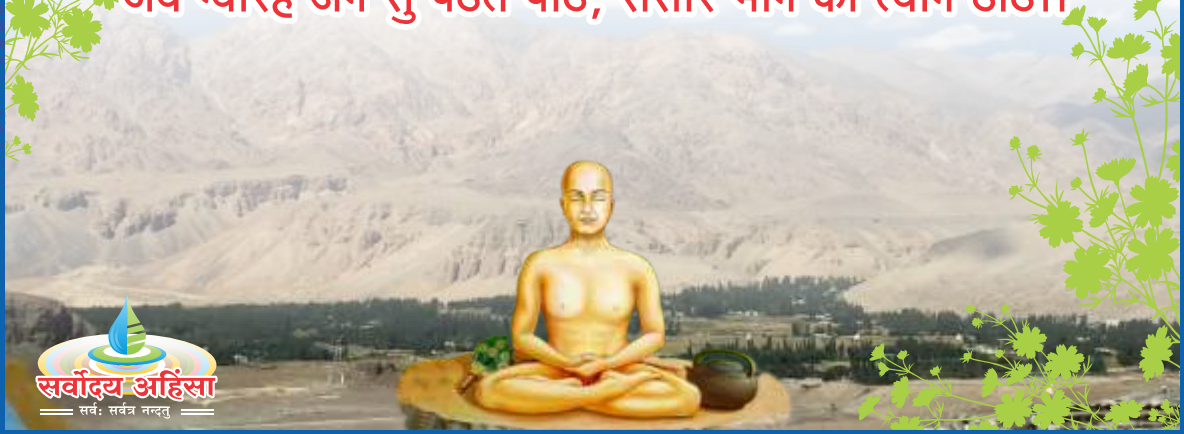
तृण जल भी अदत्त नहिं लेवें, धन कंचन तृण–सम समझें वे।
महा अचौर्य व्रत के गुरु धारी, तिनके पायन धोक हमारी।।
अठरह सहस शील के भेदा, निर्भय धारत हो सु अखेदा।
शील महाव्रत के मुनि धारी, तिनके पायन धोक हमारी।।
चौबीस भेद परिग्रह गाये, सर्व त्याग वनवास कराये।
परिग्रह त्याग महाव्रत धारी, तिनके पायन धोक हमारी।।



सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

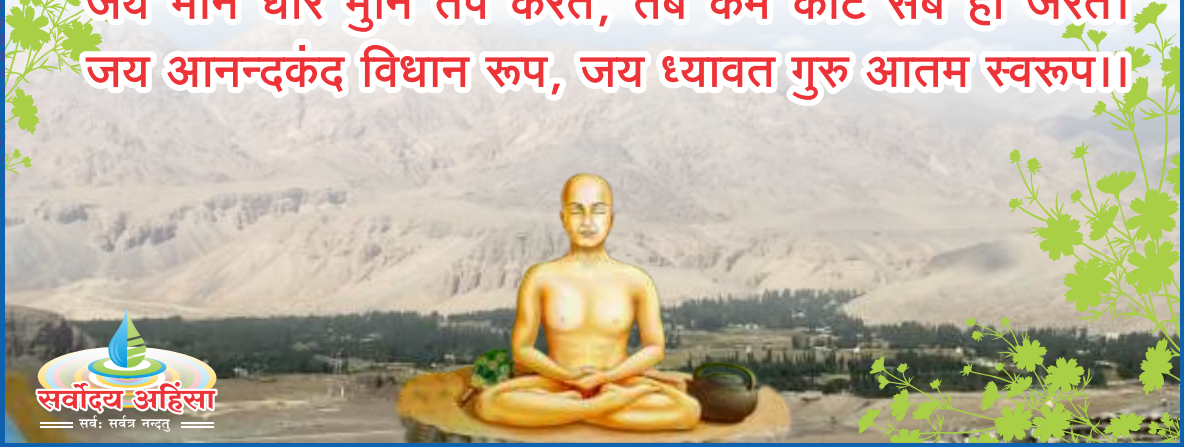
(पद्धरि)

सु भावत बारह भावन नित्त, विचारत धर्म सदा सु पवित्त।
जय ग्यारह अंग सु पठत पाठ, संसार भोग का त्याग ठाठ।।



सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

पंचेन्द्रिय दमन करें महान, मन वचन काय कर शुद्ध ध्यान।
जय मुनिवर वन्दूँ शांतचित्त, संसार देह भोगनि विरत्त।।
जय मौन धार मुनि तप करंत, तब कर्म काट सब ही जरंत।
जय आनन्दकंद विधान रूप, जय ध्यावत गुरु आतम स्वरूप।।



सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

संसार कष्ट काटो मुनीन्द्र, तुम चरणन में सब देव इन्द्र।
जय मुनिवर वन्दूँ कर्म काट, शिवनारि वरण का करत ठाट।।
मैं अल्प मति अज्ञान बुद्धि, प्रभु! क्षमा करो जो हो अशुद्धि।
रघुवर वंदत शीश नाय, श्री गुरु गुण गाये बनाय।।

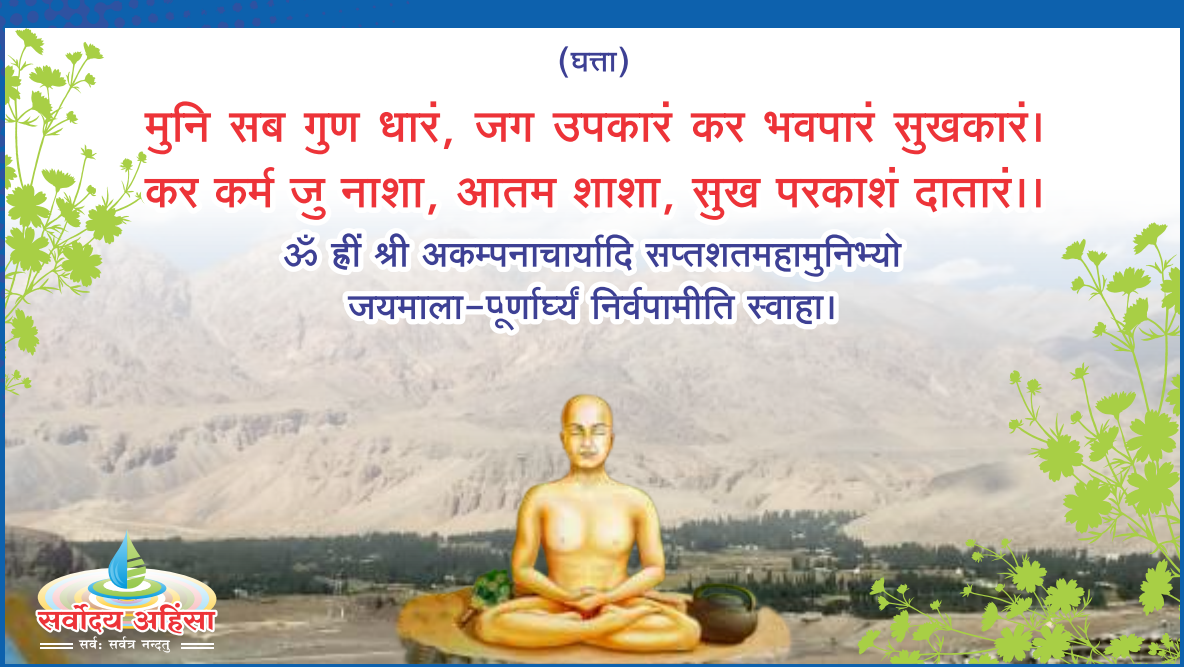


सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु

(घत्ता)

मुनि सब गुण धारं, जग उपकारं कर भवपारं सुखकारं।
कर कर्म जु नाशा, आतम शाशा, सुख परकाशं दातारं।।

ॐ ह्रीं श्री अकम्पनाचार्यादि सप्तशतमहामुनिभ्यो
जयमाला-पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।



सर्वोदय अहिंसा
सर्वः सर्वत्र नन्दतु